KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

स्वतंत्र भारत में राजनीति

अध्याय - 6

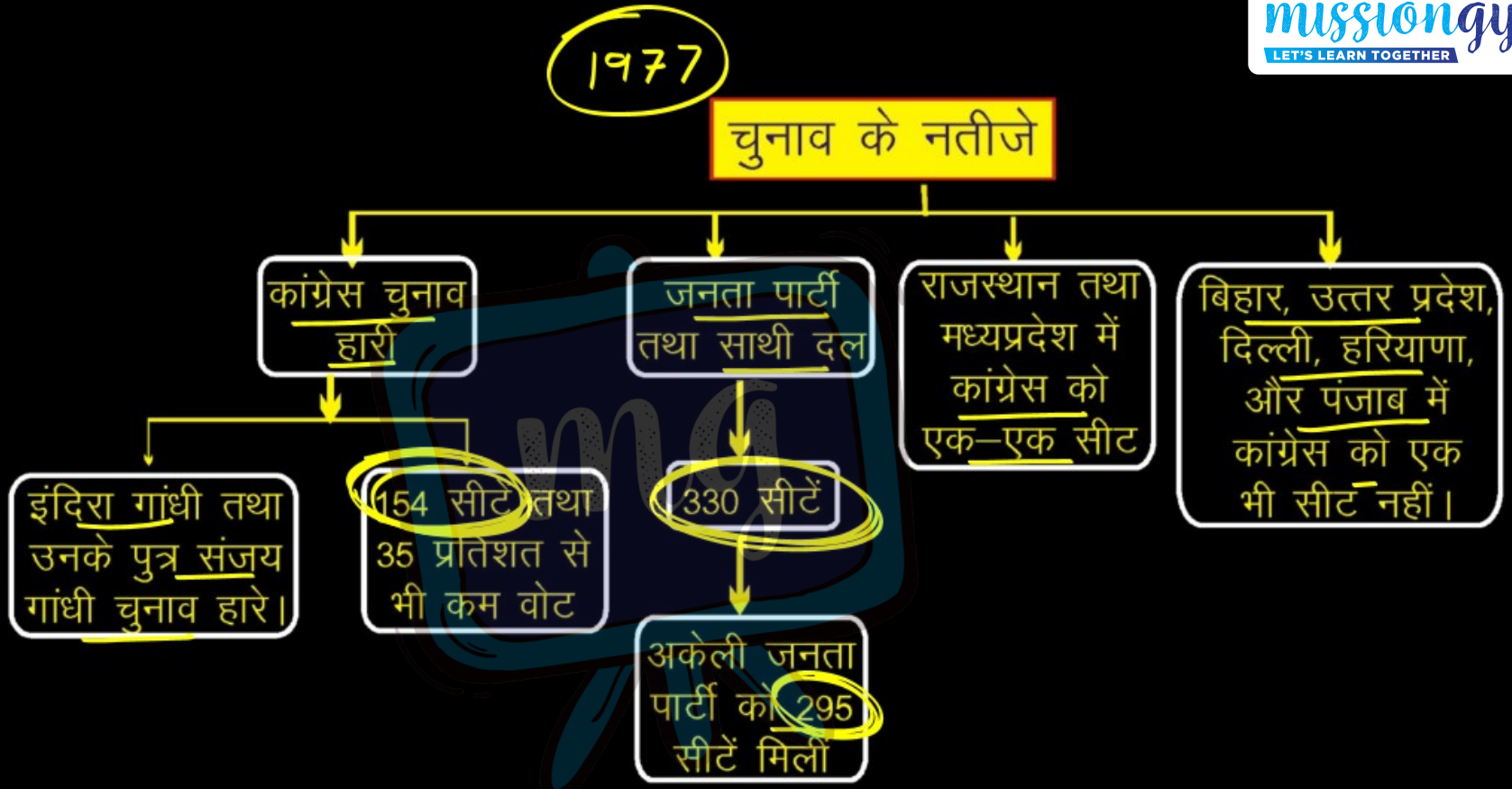
लोकतांत्रिक व्यवस्था का संकट

भाग - 6

Satyaveer Yadav

KOLORS
make life better

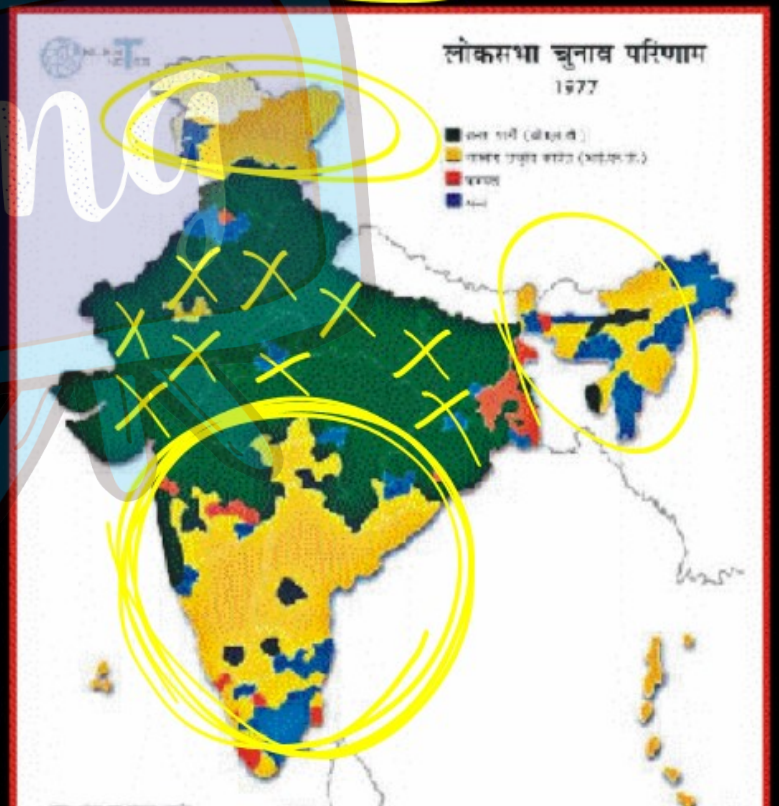
missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- कांग्रेस देश में हर जगह चुनाव नहीं हार
- दक्षिणी भारत के राज्यों में कांग्रेस विजयी हुई थी।
- महाराष्ट्र, गुजरात और उड़ीसा में कांग्रेस ने कई सीटों पर अपना कब्जा बरकरार रखा था।



KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चुनाव परिणाम - कारण :-

- आपातकाल का प्रभाव हर राज्य पर एकसमान नहीं पड़ा था।
- लोगों को जबरन उजाड़ने और विस्थापित करने अथवा जबरन नसबंदी करने का काम ज्यादातर उत्तर भारत के राज्यों में हुआ था।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

जनता सरकार

- जनता पार्टी सरकार में कोई खास तालमेल नहीं
  - प्रधानमंत्री पद के लिए होड़
    - मोरारजी देसाई
      - 1966–67 से ही इंदिरा गांधी के प्रतिद्वंद्वी
    - चौधरी चरणसिंह
      - भारतीय लोकदल के प्रमुख उ.प्र. के किसान नेता
    - जग–जीवन राम
      - कांग्रेसी सरकारों में मंत्री पद पर रहने का विशाल अनुभव
  - 32 वर्ष
- किसी दिशा नेतृत्व अथवा साझे कार्यक्रम का अभाव
  - कांग्रेस द्वारा अपनायी गई नीतियों में कोई बुनियादी बदलाव लाने में असफल
- 18 माह में मोरारजी देसाई की सरकार ने बहुमत खोया।
  - चौधरी चरण सिंह की सरकार कांग्रेस के समर्थन से
    - कांग्रेस ने समर्थन वापस लिया 4 माह में सरकार गिरी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

अब आगे :-

- जनवरी 1980 में लोकसभा के नए सिरे से चुनाव।
- जनता पार्टी को उत्तर भारत में मिली करारी शिकस्त।
- इंदिरा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्टी ने भारी सफलता हासिल की।
- 352 सीटों के साथ सत्ता में।

1977-1979 के लोकतांत्रिक राजनीति का सबक

- अगर सरकार अस्थिर हो और उसके भीतर कलह हो तो मतदाता ऐसी सरकार को कड़ा दण्ड देते हैं।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

विरासत (1975-1980) :-

- कांग्रेस पार्टी एक नेता की लोकप्रियता पर निर्भर हुई।
- कांग्रेस की प्रकृति में आये बदलावों के मध्यनजर अन्य विपक्षी दल 'गैर-कांग्रेसवाद' की राजनीति की तरफ मुड़े।
- 1977 में लोकसभा के साथ-साथ उत्तर भारत के राज्यों में भी और गैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं।
- उन सरकारों के बनने में पिछड़ी जाति के नेताओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी।

KOLORS
make life better

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

- आपातकाल और उसके आसपास की अवधि को संवैधानिक संकट के रूप में भी देखा जा सकता है।
- संसद और न्यायपालिका का संघर्ष भी आपातकाल के मूल में।

राजनीति संकट के रूप में -

- सत्ताधारी पार्टी के पास पूर्ण बहुमत था फिर भी इसके नेतृत्व ने लोकतंत्र को ठप्प करने का फैसला किया।
- आपातकाल के दौरान प्राप्त संवैधानिक शक्तियों का दुरुपयोग हुआ।